जादू के असर से प्रभावित हो जाना नुबुव्वत व रिसालत के खिलाफ नही.

मआरिफुल कुरान/१व८. मुफ्ती शफी उस्मानी रह.

नोट.- ये PDF कोई भाषा या व्याकरण नही हे,
बल्कि दीन-ए-इस्लाम को समझने के लिये हे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम.

जो लोग जादू की हकीकत से नावाकिफ हे उन्को ताज्जुब होता हे कि नबीए करीम अलैहिस-सलाम पर जादू का असर कैसे हो सकता हे.

उस्की की हकीकत और उस्की किस्मे व अहकाम.

सूरे बकरह २ / आयत १०२ मे अल्लाह तआला फरमाते हे तर्जुमा और पीछे हो लिये उस इल्म के जो पढते थे शैतान सुलैमान कि बादशाहत के वक्त, और कुफ्र नही किया सुलैमान ने लेकिन शैतानो ने कुफ्र किया कि सिखलाते थे लोगो को जादू, और उस इल्म के पीछे हो लिये जो उतारा दो फरिश्तो पर शहर बाबिल मे, जिन्का नाम हारूत और मारूत हे और नही सिखाते थे वे दोनो फरिश्ते किसी को जब तक यह ना कह देते कि हम तो आज़माईश (इम्तिहान और परीक्षा) के लिये हे सो तू काफिर मत हो.

फिर उन्से सीखते वह जादू जिस्से जुदाई डालते हे मर्द मे और उस्की औरत मे, और वे इस्से नुकसान नही कर सकते

किसी का बगैर अल्लाह के हुक्म के, और सीखते हे वह चीज जो नुक्सान करे उन्का जौर फायदा ना करे, और खूब जान चुके हे कि जिस्ने इख्तियार किया जादू को नही उस्के लिये आखिरति मे कुछ हिस्सा, और बहुत ही बुरी चीज हे जिस्के बदले बेचा उन्होंने अप्ने आपको अगर उन्को समझ होती.

खुलासा ए तफसीर.

और (यहूदी ऐसे बेअक्ल हे कि उन्होने (अल्लाह की किताब की तो पैरवी नाकी और) ऐसी चीझ की (यानी जादू की) पैरवी (इख्तियार) की जिस्का चर्चा किया करते थे शयातीन (यानी खबीस जिन्न) हज़रत सुलैमान (अल) की हुकूमत (के ज़माने) मे.

और (बाजे बेवकूफ जो हज़रत सुलैमान (अल) पर जादू का गुमान रखते हे बिल्कुल ही बेहूदा और बेकार बात हे, क्युकी जादू तो एतिकादी या अमली तौर पर कुफ्र हे और) हज़रत सुलैमान (अल) ने (नऊजु बिल्लाह कभी) कुफ्र नही किया, मगर (हा) शयातीन (खबीस जिन्न बेशक) कुफ्र (की बाते और काम यानी जादू) किया करते थे.

और हालत येह थी कि (खुद तो करते ही थे और) आदमियो को भी (उस) जादू की तालीम किया करते थे, (सो वोही जादू निरन्तर चला आ रहा हे उस्की पैरवी ये यहूदी करते हे) और (इसी तरह) उस (जादू) की भी (ये लोग पैरवी करते हे, जो कि उन दोनो फरिश्तो पर (एक खास हिक्मत के वास्ते) नाज़िल किया गया था

(जो शहर) बाबिल मे (रहते थे) जिन्का नाम हारूत व मारूत था.

और वे दोनो (वोह जादू) किसीको ना बतलाते जब तक (एहतियात के तौर पर पहले ही) येह (ना) केह देते कि हमारा वजूद भी (लोगो के लिये अल्लाह की तरफ से) एक आजमाईश हे (कि हमारी ज़बान से जादू पर अवगत होकर कौन फसता हे और कौन बचता हे) सो तू (इस्पर बाखबर और जानकार होकर) कही काफिर मत बन जाईयो (कि इस्मे फस जाये).

सो (कुछ) लोग उन दोनो (फरिश्तो) से इस किस्म का जादू सीख लेते थे जिस्के जरिये से (अमल करके) किसी मर्द और उस्की बीवी मे जुदाई पैदा कर देते थे. और (इस्से कोई वेहम और खौफ मे ना फस जाये कि जादूगर जो चाहे कर सकता हे, क्युकी येह यकीनी बात हे कि) ये (जादूगर) लोग उस (जादू) के ज़रिये से किसीको (ज़र्रा बराबर) भी नुकसान नही पहुंचा सकते थे मगर खुदा ही के (तकदीरी) हुक्म से.

और (ऐसा जादू हासिल करके बस) ऐसी चिझे सीख लेते हे जो (खुद) उन्को (गुनाह की वजह से) नुकसान पहुंचाने वाली हे और (किसी खास दर्जे मे) उन्को नफा देने वाली नही हे (तो यहूदी भी जादू की पैरवी से बडे नुकसान मे होंगे) और (येह बात कुछ हमारे कहने की नही बल्की) ज़रूर ये (यहूदी) भी इतना जानते हे कि जो शख्स उस (जादू) को (अल्लाह की किताब के बदले) इख्तियार करे ऐसे शख्स का आखिरत मे कोई हिस्सा (बाकी)

नही. और बेशक बुरी हे वोह चीझ (यानी जादू व कुफ्र) जिस्मे वे लोग अपनी जान दे रहे हे. काश उन्को (इतनी) अक्ल होती.

और अगर वे लोग (बजाय इस कुफ्र व बुरे आमाल के) ईमान और तकवा (यानी परहेज़गारी इख्तियार) करते तो अल्लाह तआला के यहा का मुआवज़ा (इस कुफ्र व बुरे आमाल से हज़ार दर्जे) बेहतर था. काश उन्को (इतनी) अक्ल होती!.

खुलासा २

यहा इतना जानना ज़रूरी हे कि जादू का असर भी तबई असबाब का असर होता हे जैसे आग से जलना या गर्म होना, पानी से सर्द होना, बाजे तबई असबाब से बुखार आ जाना या मुख्तलिफ किस्म के दर्द और रोगो का पैदा हो जाना एक तबई चीझ हे जिस्से पैगम्बर व अम्बिया अलग नही होते, इसी तरह जादू का असर भी इसी किस्म से हे इस्लीये कोई मुहाल व दूर की बात नही.